

हज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के बताए हुवे
मर्दों, औरतों और बच्चों के लिए बहुत जरूरी यकीनी फायदोंवाले

मस्नून वज़ाइफ

मुफती महमुद मोलाना सुलैमान बारडोली

नाशिर

मद्रसा समदिय्यह महमूदिय्यह उदगांव

नाज़िमः मोलाना जमालुल्लाह इब्ने शैख अमानुल्लाह इरानी

जरूरी बातें

१. हज़रत नबीए करीम ﷺ ने इर्शाद फरमाया: जो शख्स मेरी उम्मत को दीनदारी के बारे में चालीस हदीसों पढ़ें चाहे तो अल्लाह तआला कयामत के दिन उसको फकीहों यअनी आलिमों की जमाअत में उठावेंगे, और मैं खुद उसकी सिफारिश करूंगा, और उसके इमान की गवाही दूंगा। (मिशकात)

२. इस छोटी सी किताब में हज़रत नबीए करीम ﷺ से नकल किए हुवे हदीस शरीफ में आए हुवे मुबारक वज़ाइफ आपकी खिदमत में हम पेश करते हंय, हर वज़ीफे के साथ उसका हवाला भी लिख दिया गया है, अहादीस का खुलासा पेश किया गया है, बिअयनिही अलफाज़ नहीं है।

३. यह वह वज़ाइफ हंय जिनका फायदा यकीनी है, अल्लाह तआला की तरफ पूरा घ्यान लगा कर इख्लास और यकीन के साथ पढ़ो, इन्शाअल्लाह हर वज़ीफे का हदीस

शरीफ में आया हुवा फायदा जरूर हासिल होगा।

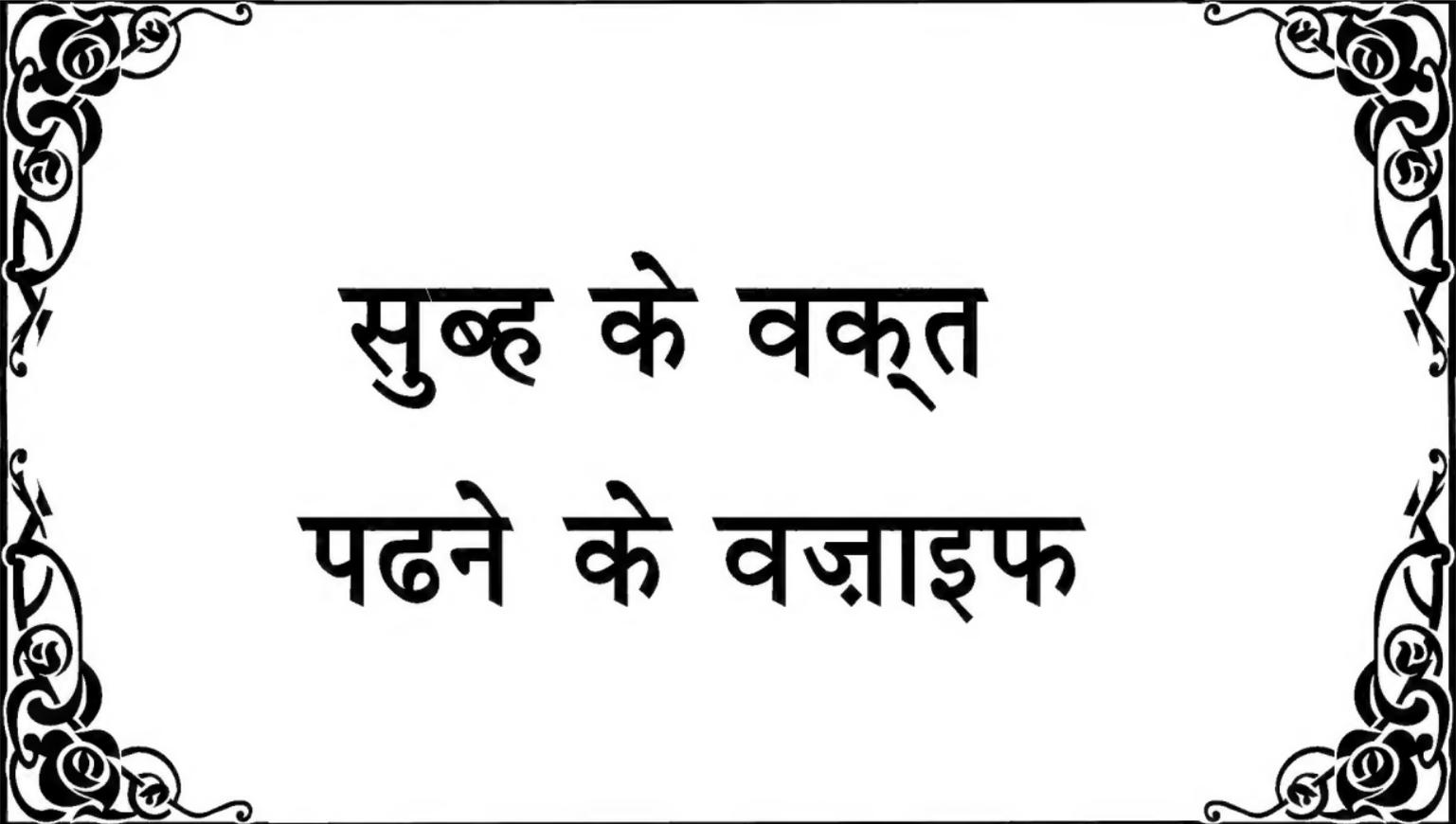
४. सुबह-शाम पंदरह मिनट, हर फर्ज नमाज़ के बाद पांच मिनट, रात सोते वकत दस मिनट इन वज़ाइफ को पढने के लिए फारिग करो, इन्शाअल्लाह इसके अजीब बरकात दुन्या आखिरत में पाओगे।

५. आजके ज़माने में जबके हर इन्सान मशगूल मशगूल होने की बात कर रहा हे, थोडे से वकत में इन वज़ाइफ के ज़रिए बहोत सारा सवाब और फायदे हासिल हो जाएंगे।

६. कोशिश करके पूरे फिक्र के साथ इन वज़ाइफ की पाबंदी शुरू करो, आसानी के लिए इस किताब को जैब में रखो, और जैब से निकाल कर पढ लिया करो, अल्लाह तआला हम सबको दुन्या व आखिरत में अपनी रज़ा से मालामाल फरमाए, आपके मुफीद मश्वरे और इस्लाही कलिमात का इन्तेज़ार रहेगा। वस्सलाम

महमूद बारडोली

जामिअह डाभेल

A decorative border with intricate floral and scrollwork patterns in black and white, framing the central text.

सुब्ह के वक्त
पढने के वज़ाइफ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अमल छोटा सवाब बडा

❖❖ थोडी देर में बहोत ज़यादह नेकी :

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهِ، عَدَدَ خَلْقِهِ، وَ رِضَا نَفْسِهِ، وَ زِينَةَ عَرْشِهِ،

وَ مِدَادَ كَلِمَاتِهِ. (तीन मरतबा सुब्ह)

फज़ीलत: उम्मुल मुअमिनीन हज़रत जुवयरीयह रदि इर्शाद फरमाती हंय के एक मरतबा हुजुर ﷺ सुब्ह की नमाज़ के वकत जबके वह (यअनी हज़रते जुवयरीयह रदि.) अपने मुसल्ले पर थीं (यअनी ज़िक्रो दुआ में मशगूल थीं) उनके यहांसे

नीकल कर गये, फिर चाश्त के बाद लोटे और हज़रत जुवयरीयह रदि. अभी तक उसी हालत पर बेठी थीं, तो हुजुर ﷺ ने पुछा:

“तुम अभी तक इसी हालत पर हो? जिस हालत पर मेंने तुमको छोडा था। ”

“अपनी जगा से उठे नहीं?” यअनी इतने वकत तक ज़िक्र में ही रहे।

उन्होंने कहा: “जी हां। ” (में उसी हालत पर हूं।)

हुजुर ﷺ ने फरमाया: “में ने तुमसे जुदा होने के बाद यअनी तुम्हारे पास से निकलने के बाद चार कलिमात तीन मरतबा कहे हंय, अगर उनको उन तमाम कलिमात के साथ जो तुमने आज कहे हंय वज़न कर दीया जाए तो वह चार कलिमात (जो उपर लीखे हंय) उन पर गालीब हो जाएं। ” (यअनी उनका सवाब झयादह हो जावेगा) (मिशकात १/२००, मुस्लिम, मुस्नदेअहमद: १/५८१)

﴿ २ ﴾ जान-माल, घरबार की सलामती की दुआ:

(रोज़ाना सुबह एक मरतबा पढ लो)

رَبِّيَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ
 الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، مَا شَاءَ اللَّهُ كَانَ وَ مَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ، وَلَا
 حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ، أَشْهَدُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ
 شَيْءٍ قَدِيرٌ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا، أَعُوذُ بِاللَّهِ
 الَّذِي يُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ مِنْ كُلِّ

دَابَّةِ رَبِّي أَخَذُ بِنَاصِيَتِهَا إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ .

फज़ीलत: हज़रत हसन रह. से रिवायत है के हम नबीए करीम ﷺ के एक सहाबी के पास बेटे हुए थे तो कीसीने आ कर उनको कहा:

के “तुम्हारे घर की खबर लीजीये, वह जल चूका है”

तो आपने फरमाया: “के नहीं जला है,”

वह शख्स जा कर फीर आया। केहने लगा “अपने घर की खबर लो, जल गया है।”

उन्होंने जवाब दीया, “नहीं! खुदाए पाक की कसम मेरा घर नहीं जला है।”

तो उस पर खबर देने वाले ने कहा के, “घर तो जल गया है और आप हें के कसम खा रहे हो के नहीं जला है।”

तो उन सहाबी रदि. ने अर्ज़ कीया: “के मेंने हुजुर अकदस ﷺ को इर्शाद फरमाते हुए सुना के, जो शख्स सुब्ह में यह दुआ (यअनी जो उपर लीखवी गई है) पढे तो उस शख्स को अपने जान-माल और घरबार के सिलसिले में कोई नागवार बात पेश नहीं आएगी। और आज में ने यह दुआ पढी है।”

फीर उन सहाबी ने अर्ज़ कीया: “उठो” (घर की हालत देखें) चुनान्चे आप के साथ सब खडे हुवे, (घर पहांचे तो क्या देखते हंय के) आस-पास का सबकुछ जल गया है और उनके घर को कुछ भी नहीं हुवा। (इब्नुस्सुन्नी : पेज नं २१ हनं. ५८)

❖❖ ३ ❖❖ सूरए यासीन शरीफ की फज़ीलत:

हज़रत अता इब्ने अबी रबाह रह. फरमाते हंय: के मुजे यह हदीस पहुंची है के रसुलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया जो आदमी दिन के शुरू हिस्से में यासीन पढेगा तो उसकी हाजतें पुरी की जावेंगी। (मिश्कात १/१८९)

फज़ीलत: इस लिए रोज़ाना सुब्ह एक मरतबा यासीन शरीफ पढ लो।

कुर्आन मजीद का भी हक है, रोज़ाना जितना भी हो सके कुर्आन मजीद ज़रूर पढना चाहिए, तरतीब से पढोगे तो खत्म करने में भी आसानी होगी, और साल में दो मरतबा खत्म कर लेना चाहिए।

शिक्र और दिखलावे से हिफाज़त

❖❖❖ शिक्रें अकबर (यअनी अल्लाह के साथ किसीको शरीक करना) शिक्रें अस्गर (यअनी रियाकारी, किसीको दिखाने के लिए अमल करना) दोनों से हिफाज़त की एक जामेअ दुआ:

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أُشْرِكَ بِكَ وَأَنَا أَعْلَمُ وَ

أَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا أَعْلَمُ.

फज़ीलत: हज़रत अबूबक्र रदि. से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने एक मरतबा शिर्क का ज़िक्र फरमाया के शिर्क तुम्हारे अंदर ऐसे छुपे अंदाज़ से आ जाता है जैसे च्यूटी की चाल के उसकी आवाज़ ही नहीं होती, और फरमाया के में तुम्हें एक ऐसा काम बतलाता हूँ के जब तुम वह काम कर लो तो शिर्के अकबर (बड़ा शिर्क) और शिर्के अस्गर (छोटा शिर्क यानी रिया, दिखलावे के लिए कोई काम करना) सबसे महफूज़ हो जाओ। तुम तीन मरतबा रोज़ाना यह दुआ किया करो, फिर उपरवाली दुआ बतलाई। (मआरिफुल कुर्आन: ५/६६३)

नोट: रिवायत में मुल्लकन रोज़ाना तीन मरतबा पढने का ज़िक्र है इसी लिए किसीभी वकत पढ लेना काफी है, अलबत्ता सुबह का वक़्त दिलजर्म्ई का होता है उस वक़्त पढ लो तो और ज़यादह अच्छा होगा।

सुबह-शाम दोनों वक्त
पढने के वज़ाइफ

﴿ ५ ﴾ जिस दुआ के पढने से खुद अल्लाह तआला बंदे को कयामत में राज़ी करनेकी ज़िम्मेदारी लेवे: (सुब्ह शाम तीन मरतबा)

رَضِيْتُ بِاللَّهِ رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا وَرَسُولًا .

हज़रत षवबान रदि. फरमाते हंय के रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने इर्शाद फरमाया:

जो मुसलमान बंदा सुब्ह-शाम तीन मरतबा (यह उपर के कलिमात) पढे तो (कयामत के दिन) उसको राज़ी करने की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआला लेंगे।

(तिरमीज़ी: २/१७६, इब्ने माजा: २८४)

नोट: तिरमीज़ी की रिवायत में **رَسُولًا** नहीं है, यह मुख्तलिफ रिवायात को मिला कर जामिअ कलिमह पेश किया गया है।

﴿ ٦ ﴾ सुबह-शाम के दरम्यान की कोताहियां मुआफ होने का वज़ीफा:

(सुबह शाम एक मरतबा)

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ . بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ .

فَسُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَ حِينَ تُصْبِحُونَ . وَ لَهُ الْحَمْدُ
 فِي السَّمَوَاتِ وَ الْأَرْضِ وَ عَشِيًّا وَ حِينَ تُظْهِرُونَ . يُخْرِجُ
 الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ يُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَ يُحْيِي الْأَرْضَ
 بَعْدَ مَوْتِهَا وَ كَذَلِكَ تُخْرَجُونَ .

(سورة روم: ١٩)

फज़ीलत: हदीस शरीफ में है के जो शख्स यह आयात सुबह के वकत पढ़ लेवे तो जो

उससे फोट हो गया वह उसे पा लेगा और जो शामको यह आयात पढ लेवे उसको भी छूटे हुवे वज़ाइफ का सवाब मिल जाएगा। (अबु दावुद: २/६९२)

नोट: यअनी जो मअमूलात छूट गए हों उसकी तलाफी हो जाएगी और सवाब मिल जाएगा। (इस लिए इस आयत को सुबह-शाम एक मरतबा पढ लेना चाहिए)

(अवनुल मअबूद: १३/२८५)

﴿ ७ ﴾ सूरए इख्लास और मुअव्वज़तैन के फज़ाइल,
फवाइद पढने के अवकात और तरीका:

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ • بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ •

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ • اللَّهُ الصَّمَدُ • لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ • وَلَمْ

يَكُنْ لَهُ كُفُوءًا أَحَدٌ ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا
خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي
الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝
إِلَهِ النَّاسِ ۝ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي

صُدُورِ النَّاسِ مِنَ الْجَنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

हजरत अब्दुल्लाह बिन खुबैब रदि से रिवायत है के एक रात को बारिश और सख्त अंधेरा था, हम रसूलुल्लाह ﷺ को तलाश करने के लिए निकले, ताके हमको नमाज़ पढाएं, जब आपको पा लिया, तो आपने फरमाया: “के कहो” तो में ने कुछ नहीं कहा, फिर इसी तरह हुवा फिर आप ﷺ ने तीसरी मरतबा फरमाया: “के कहो”

मेंने अर्ज़ किया :“ क्या कहुं?”

“आपने फरमाया: **قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ** और मुअव्वज़तैन यअनी **قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ** और **قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ** पढो, जब सुब्ह हो और जब शाम हो, तीन तीन मरतबा पढना हर चीज़ की तरफ से तुम्हारे लिए काफी होगा यअनी हर तरह की तकलीफ

से हिफाजत होगी।

(अबुदावुद; किताबुल अदब: १३)

इस लिए रोज़ना सुबह शाम तीन तीन मरतबा यह तीनों सूरतें पढ लेवे।

नोट: हज़रत आइशा रदि. फरमाती हंय के रसूलुल्लाह ﷺ को जब कोई बीमारी पेश आती तो यह दोनों सूरतें (قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ) और (قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ) पढ कर अपने हाथों पर दम करके सारे बदन पर फेर लेते थे। और फिर जब मरजुल वफात में (यअनी जिस बीमारी में वफात हुइ) आपकी तकलीफ बढी तो में यह सूरतें पढ कर आपके हाथों पर दम कर देती थी, आप अपने तमाम बदन पर फेर लेते थे। में यह काम इस लिए करती थी के हज़रत ﷺ के मुबारक हाथों का बदल मेरे हाथ नहीं हो सकते थे।

(मुअत्ता मालिक: ३७५)

बुखारी शरीफ की एक हदीस से मअलूम होता है के हुज़ूर ﷺ बीमारियों के मोके पर मुअव्वज़ात (यअनी قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ) और (قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ) और (قُلْ أَعُوذُ)

(رَبِّ النَّاسِ) को पढ़ कर अपने ऊपर दम करते रहते थे, और मरजुल वफात में भी यह अमल फरमाया।
(बुखारी: २/६३९)

नोट: हदीस शरीफ से मअलूम होता है के सुबह में उठते वकत भी इन दोनों सूरातों (यअनी قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ और قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ) को पढ़ लेवे। (मआरिफुल कुर्आन)

❁❁ बहोत से फायदेवाला कलिमह: (सुबह शाम एक मरतबा)

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ.

फज्ज़ीलत: हदीस शरीफ में है जो शख्स सुबह के वकत यह कलीमह पढे (यअनी एक मरतबा) १. उसे हज़रत इस्माइल عليه السلام की अवलाद में से एक गुलाम आज़ाद करने का

सवाब मीलता है।

२. उसके लिए दस (१०) नेकीयां लीखी जाती है।

३. उसके दस (१०) गुनाह मआफ होते है।

४. उसके दस (१०) दरजे (जन्नत में) बुलंद होते है।

५. वह शाम तक शयतान की शरारत से महफुज़ रहता है।

और जो शख्स यह कलीमह शाम को पढे तो सुब्ह तक उसके लीये ऐसा ही होता है।

(अबुदावुद: २/६९२, इब्ने माजा: ३६४)

❁❁ जिन्नात से हिफाज़त के लिये दुआ:

أَعُوذُ بِوَجْهِ اللَّهِ الْكَرِيمِ، وَبِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ الَّتِي لَا
يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلَا فَاجِرٌ، مِّنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَشَرِّ

مَا يَعْرُجُ فِيهَا، وَ شَرِّ مَا ذَرَأَ فِي الْأَرْضِ وَ شَرِّ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا،
 وَ مِنْ فِتْنِ اللَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَ مِنْ طَوَارِقِ اللَّيْلِ وَ النَّهَارِ إِلَّا
 طَارِقًا يَطْرُقُ بِخَيْرٍ يَا رَحْمَنُ

(मुअत्ता हदीस नं १९०८, ४/४०८)

एक खबीस जिन्नात आग का शोअला ले कर हुजूर ﷺ के पीछे लगा तो
 उसको दूर करने के लिए हज़रत जिब्रइल عليه السلام ने उपरवाली दुआ दुआ सिखाई।

(इख्तीसार के साथ बिल मअ्ना)

शरारत करनेवाले जिन्नात से बचने के लिए यह दुआ बहोत मुफीद है।

नोट: रिवायत में इस दुआ के मुतअल्लिक कब पढना हय? और कितनी मरतबा पढना
 हय? यह नहीं मिल सका, इस लिए दिन में किसीभी एक वकत पढ लेवे तो

इन्शाअल्लाह काफी हो जाएगा, और सुबह-शाम दोनों वकत पढ़ लेवे तो भी ठीक है।

❖ १० ❖ जादू से हिफाज़त के मुफीद कलिमात:

أَعُوذُ بِوَجْهِ اللَّهِ الْعَظِيمِ الَّذِي لَيْسَ شَيْءٌ أَعْظَمَ مِنْهُ، وَ
بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ الَّتِي لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلَا فَاجِرٌ، وَ
بِأَسْمَاءِ اللَّهِ الْحُسْنَى كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا لَمْ أَعْلَمْ مِنْ

(मुअत्ता हदीस नं१९१०, ४/४०९)

شَرِّ مَا خَلَقَ وَبَرِّءَ وَ ذَرَاءَ

फज़ीलत: हज़रत कअब अहबार रदि. से रिवायत है के अगर चंद कलिमात का में विर्द न रखता तो यहूद मुजे (जादू के ज़ोर से) गधा बना देते, इस लिए जादू से

हिफाज़त के लिए यह दुआ पढते रहना चाहिए। कअब अहबार रदि बडे यहूदी आलिम थे, तौरात के हाफिज़ थे, जब उन्होंने इमान कबूल किया तो यहूद उनके दुश्मन बन गए, और उन पर जादू करने लगे।

नोट: रिवायत में इस दुआ के मुतअल्लिक कब पढना हय? और कितनी मरतबा पढना हय? यह नहीं मिल सका, इस लिए दिन में किसीभी एक वकत पढ लेवे तो इन्शाअल्लाह काफी हो जाएगा, और सुब्ह-शाम दोनों वकत पढ लेवे तो भी ठीक है।

❁❁❁ एकसीडन्ट, हवादिसात से बचने की दुआ: (सुब्ह शाम तीन मरतबा)

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي
السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ.

हज़रत अबान बिन उस्मान रह. हज़रत उस्मान गनी रदि. से रिवायत करते हंय के

जो शख्स रोज़ना सुब्ह शाम तीन मरतबा यह दुआ पढेगा उसको कोई चीज़ तकलीफ नहीं पहोंचा सकती।

फिर अबान बिन उस्मान रह. (इस हदीस के रावी) को फालिज की बीमारी लग गई तो जिन्होंने यह हदीस हज़रत अबान रह से सुनी थी वह तअज्जुब से उनकी तरफ देखने लगे।

तो आपने फरमाया: “कयुं इस तरह तअज्जुब से देखते हो?”

“अल्लाह पाक की कसम! न मेंने तुमको वह हदीस झूटी बयान की और न मुजे वह झूट बयान की गई। (हदीसें तो अपनी जगा बिल्कुल सहीह हंय के उसके पढने से कोई चीज़ नुकसान नहीं पहोंचा सकती) लेकिन जब अल्लाह तआला ने मेरे उपर अपनी तकदीर को नाफिज़ करना चाहा तो में वह दुआ पढना

ही भूल गया। ”

(अबुदावुद : किताबुल अदब; १४)

फज़ीलत: हदीस शरीफ में यह भी है के जो शख्स हर रोज़ सुबह-शाम यह कलिमात (यअनी उपरवाली दुआ) तीन मरतबा पढेगा उसको कोई चीज़ नुकसान नहीं पहुँचा सकती।

(अत्तरगीब: १/४१५)

और एक रिवायत में है के उस पर कोई अचानक आफत नहीं आती। (अबुदावुद : १/६९४)

दुश्मनों और बलाओं से हिफाज़त

❖ १२ ❖ हुज़ूर ﷺ से नकल की गई सुबह शाम मांगने की दो मुबारक दुआएं:

(एक एक मरतबा)

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ جَهْدِ الْبَلَاءِ، وَدَرْكِ الشَّقَاءِ، وَ

سُوءِ الْقَضَاءِ، وَ شَمَاتَةِ الْأَعْدَاءِ. (مفہوم از بخاری شریف: ۹۷۹/۲)

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَمِلْتُ، وَمِنْ شَرِّ مَا لَمْ أَعْمَلْ. ﴿١٣﴾
(इब्ने माजा: २८१)

हर बुराई हर तकलीफ से हिफाज़त

﴿१४﴾ हर तकलीफ से अमान पाने की दुआ: (शाम को तीन मरतबा पढ़ें)

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ.

कबीलए असलम के एक आदमीने हुजुर ﷺ से कहा के आजकी रात

मुजे नींद नहीं आयी,

आप ﷺ ने पूछा: “कीस वजह से?” उन्होंने कहा: “के मुजे बिच्छुने डस लीया।”

तो आप ﷺ ने फरमाया: “अगर शाम को तुमने यह दुआ पळहली होती तो (इन्शा अल्लाहु अज़ज़वजल्ल) कोई चीज़ तुम्हें तकलीफ न पहोंचाती।

(मुस्लीम : २/३४७, तबरानी : ह.नं. ३४६, २/९५५,)

नोट: तिरमिज़ी शरीफ में एक हदीस में आया है के शाम के वकत तीन मरतबह इस दुआ को पळहने से उस रात में बुखार-ज़हर (वगैरह कोई चीज़) नुकसान नहिं देगी।

(तिरमिज़ी: २/२००)

उसमें एक रावी हज़रत सुहैल रह फरमाते हंय : हमारे घरवालों ने यह दुआ याद कर ली वह रोज़ाना रात को पढ लिया करते थे, पस एक लडकी को बिच्छू ने डस लिया तो उसको इस दुआ की बरकत से कोई तकलीफ नहीं हूइ।

नोट: और अवराद की बाज़ किताबों में देखा के सुब्ह में भी यह दुआ तीन मरतबा पढ लेना चाहिए।

﴿ १५ ﴾ आयतुल कुर्सी और सूरए मुअमिन की चंद आयतों की फज़ीलत:

(आयतुल कुर्सी और सूरए मुअमिन की यह आयतें सुब्ह-शाम एक मरतबा पढ लें)

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ . بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ .

حَم . تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ . غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ

التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّلْوَلِ ، لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ إِلَهِي الْمَصِيرُ .

१: हज़रत अबूहुरैरह रदि. से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया के जो शख्स सुब्ह में सूरए मुअमिन की पेहली तीन आयतें (उपरवाली) और आयतुल कुर्सी पढ ले वह उस दिन शाम तक (हर बुराई और तकलीफ से) महफूज़ रहेगा। और जो शाम को पढ लेवे तो सुब्ह तक (हर बुराई और तकलीफ से) महफूज़ रहेगा।
(तिरमिज़ी: २/११५)

❖ १६ ❖ हिफाज़त के लिए हज़रत अनस रदि . की खास

दुआ:

(सुब्ह-शाम एक या तीन मरतबा)

بِسْمِ اللّٰهِ عَلَىٰ نَفْسِيْ وَ دِيْنِيْ، بِسْمِ اللّٰهِ عَلَىٰ اَهْلِيْ وَ مَالِيْ
وَوَلَدِيْ، بِسْمِ اللّٰهِ عَلَىٰ مَا اَعْطَانِي اللّٰهُ، اللّٰهُ رَبِّيْ لَا اَشْرِكُ بِهِ

شَيْئًا، اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ. وَأَعَزُّ وَأَجَلُّ وَأَعْظَمُ مِمَّا
 أَخَافُ وَأُحْذِرُ، عَزَّ جَارُكَ وَجَلَّ ثَنَائُكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ،
 اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي وَمِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْطَانٍ مَرِيدٍ
 وَمِنْ شَرِّ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ، فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا
 هُوَ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، إِنَّ وَلِيَّيَ اللَّهُ الَّذِي
 نَزَّلَ الْكِتَابَ، وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ.

यह दुआ हज़रत अनस बिन मालिक रद्दी से मन्कूल दुआ है, जो आं

हज़रत صلی اللہ علیہ وسلم के खादिमे खास थे, उनसे नकल की हुई यह दुआ दुश्मन, ज़ालिम, शैतान से हिफाज़त के लिए बहोत ही मुफीद है, उसको पढते रहना चाहिए, सुब्ह-शाम एक मरतबा पढ लेना भी काफी है, तीन तीन मरतबा पढ लेवे तो और ज़यादह अच्छा है।
(आपके मसाइल और उनका हल: ८/२३३)

❁❁❁ इस दुआ की बरकत से अल्लाह तआला की मदद हासिल होगी और हर काम दुरूस्त हो जाएगा: (सुब्ह-शाम तीन मरतबा)

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ، أَصْلِحْ لِيْ شَأْنِيْ كُلَّهُ، وَ
لَا تَكِلْنِيْ إِلَى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ.

(الترغيب والترهيب: ۲/۲۲۱)

﴿ १८ ﴾ तंदुरस्ती और आफियत के लिए:

اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَدَنِي، اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي سَمْعِي، اللَّهُمَّ عَافِنِي
فِي بَصَرِي، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ

(ابوداؤد: ५१४/२)

उपरवाले दोनों कलिमात सुबह-शाम तीन तीन मरतबा पढ लेना चाहिए।
अबूदावुद की इसी रिवायत में है के

﴿ १९ ﴾ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ اللَّهُمَّ إِنِّي
أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ.

यह दुआ भी सुबह शाम तीन मरतबा पढना आया है, इस दुआ की बरकत

से कुफ्र, फकीरी और अजाबे कब्र से इन्शाअल्लाह हिफाज़त होगी।

❖ २० ❖ हर काम आसान हो जावे, गम और उलझन दूर हो

जावे:

(सुबह-शाम सात मरतबा)

حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ

फज़ीलत: एक हदीस में है के जो शख्स सुबह-शाम यह कलिमात सात मरतबा पढे तो अल्लाह तआला उसके हर काम को आसान फरमा देते हंय, यअनी दुन्या व आखिरत के हर अहम कामों की किफायत फरमाते हंय।

(तरगीब: १/२५५; मकतबए अब्बास अहमद अलबाज़, मक़तुल मुकर्रमह, अबूदावुद)

❖ २१ ❖ इस्तिगफार का सरदार:

(सुबह-शाम एक मरतबा)

اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ خَلَقْتَنِي وَ أَنَا عَبْدُكَ وَ أَنَا
عَلَىٰ عَهْدِكَ وَ وَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا
صَنَعْتُ أَبُوؤُكَ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَ أَبُوؤُكَ لَكَ بِذُنُوبِي
فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ .

यह सख्खिदुल इस्तिगफार है, यअनी अपने गुनाहों से मुआफी मांगने के लिए जितने अल्फाज़ हंय उनमें यह सरदार की हयसियत रखते हंय, लिहाज़ा इस दुआ को मांगते हुवे खूब नदामत हो, और आंखों से आंसू टपके, और दिल से

मुआफी चाहे के अय अल्लाह आज तु मुआफ फरमा दे।

फज़ीलत : जो शख्स इस दुआको इसकी फज़ीलत पर यकीन रखते हुवे सुब्ह पढे और शाम से पेहले वफात हो जाए तो उसके लीये जन्नत वाजिब हो जाएगी। और जिसने इसकी फज़ीलत पर यकीन रखते हुवे शामको ये दुआ पढी और सुब्ह से पेहले वफात ह्वे जाए तो उसके लीये जन्नत वाजिब हो जाएगी। (बुखारी : २/९३३)

❖ २२ ❖ दिन और रात की नेअमतों का शुक्र अदा करने की

दुआ:

(सुब्ह में यह दुआ एक मरतबह पढे)

اللَّهُمَّ مَا أَصْبَحَ بِي مِنْ نِعْمَةٍ أَوْ بِأَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ
وَحُذِّكَ لَا شَرِيكَ لَكَ، فَلكَ الْحَمْدُ وَ لَكَ الشُّكْرُ

नोट: शाम को यह दुआ एक मरतबा इस तरह पढे:

اللَّهُمَّ مَا أُمْسَى بِي مِنْ نِعْمَةٍ أَوْ بِأَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ
وَحُذِّكَ لَا شَرِيكَ لَكَ، فَلكَ الْحَمْدُ وَ لَكَ الشُّكْرُ

फज़ीलत: हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फरमाया: जो सुबह को यह दुआ पढे तो उसने आजके दिन की नेअमतों का शुक्र अदा कर दिया, (यअनी आजके दिन में जितनी भी नेअमतें उसको अल्लाह तआला की तरफ से मिली उन तमाम नेअमतों का) और जो शाम को पढे तो उसने रात की नेअमतों का शुक्र अदा कर दिया। (मिशकात: १/२११)

जो शख्स यह चाहता है के उस पर नेअमतें बहोत ज़यादह हों और मवजूदह नेअमतें हंमेशा रहे तो उसको चाहिये के ज़यादह से ज़यादह हर हाल में अल्लाह तआला का शुक्र अदा करे।

﴿ २३ ﴾ इस्तिगफार का खास फायदा:

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَ أَتُوبُ إِلَيْهِ ۝

हदीस में आया है के जो सुब्ह में यअनी फजर की नमाज़ के बाद और असर के बाद तीन मरतबा यह इस्तिगफार पढे तो उसके गुनाह मुआफ हो जाते हंय, चाहे समंदर की झाग के बराबर हों।

नोट: इसी रिवायत में आगे चल कर यह भी है के नबीए करीम ﷺ ने इर्शाद फरमाया के अय कबीसा (यह सहाबी का नाम हय) जब तुम फजर की नमाज़ पढ चुको तो तीन मरतबा पढो:

سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَ بِحَمْدِهِ ۝

तो अंधेपन और जुज़ाम और फालिज की बीमारी से आफियत रहेगी।

(यअनी इन तीन बीमारी से इन्शाअल्लाह हिफाज़त होगी) इस लिए फजर के बाद तीन मरतबा यह कलिमह पढ लेना चाहिए। (तरगीब: १/३७७, दारे इब्ने कसीर, दमिश्क, बेरूत)

❖ २४ ❖ १. “أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ”

२. “أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَ أَتُوبُ إِلَيْهِ”

३. “أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ رَبِّي مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَ أَتُوبُ إِلَيْهِ”

(तीनों मेंसे कोई भी एक रोज़ाना सो मरतबा पढने का मामूल बनाए, बेहतर है के सुब्ह-शाम दोनों वक़्त सो सो मरतबा पढ ले)

रियाज़ुस्सालिहीन में किताबुल इस्तिगफार में बुखारी व मुस्लिम शरीफ के हवाले से नकल किया है के खुद हज़रत नबीए करीम ﷺ रोज़ाना सित्तेर से

ज्यादाह मरतबा इस्तिगफार करते थे, इसी तरह १०० मरतबा भी आप ﷺ से इस्तिगफार साबित है। (रियाजुस्सालिहीन: ४२७)

कुर्आन मजीद में इस्तिगफार के कई फवाइद आए हंय, (१) इस्तिगफार की बरकत से मुसलाधार बारिश (२) माल में बरकत (३) अवलाद में बरकत (४) बाग-वाडी में बरकत (५) नहर-नदी में बरकत।

❀ २५ ❀ सुबह शाम सो **سُبْحَانَ اللَّهِ، الْحَمْدُ لِلَّهِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، اللَّهُ أَكْبَرُ**

मरतबा पढने का सवाब:

हदीस शरीफ में आया है के जो शख्स सुबह-शाम सो मरतबा **سُبْحَانَ اللَّهِ** पढे तो उसको सो हज का सवाब मिलता है, और जो सो मरतबा **لِلَّهِ الْحَمْدُ** कहे तो उसको अल्लाह तआला के रास्ते में सो घोडे मअ सामान देने का सवाब मिलता है

या सो गज़वात का सवाब मिलता है, और सुब्ह शाम सो मरतबा لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ पढे तो हज़रत इस्माइल عليه السلام की अवलाद में से सो गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है, और सो मरतबा सुब्ह शाम اللَّهُ أَكْبَرُ पढे तो उसके जितना सवाब कोई हासिल नहीं कर सकता सिवाए उस शख्स के जो इसको पढे, या इससे ज़यादह पढ लेवे।
(तिरमिज़ी: १/१८५)

❖ २६ ❖ रोज़ाना सो मरतबा दुरूद शरीफ़:

हदीस शरीफ़ में है के जो शख्स सो मरतबा दुरूद शरीफ़ पढता है तो

१. अल्लाह तआला उस पढनेवाले की पेशानी पर “*برائة من النفاق و براءة من النار*” लिख देते हंय, यअनी उस आदमी में निफाक नहीं है और जहन्नम से बचा हुवा है।

२. कयामत के दिन शहीदों के साथ अल्लाह तआला उसका
हिसाब-किताब करेंगे।

३. अल्लाह तआला एक हज़ार मरतबा दुरूद (रहमत) उतारेंगे।

(फज़ाइले दुरूद: पे.६६८)

४. हुज़ूर ﷺ के हम पर बहोत सारे हुकूक हंय, इस लिए रोज़ाना
सुब्ह-शाम कम अज़ कम सो मरतबा दुरूद शरीफ की आदत बना लो, दुरूद
शरीफ की बरकत से बीमारियों से शिफा, ज़िंदगी में सुकून, रोज़ी में बरकत,
अल्लाह तआला की मुहब्बत, नबी ﷺ की मुहब्बत, यह सब नेअमतें
इन्शाअल्लाह हासिल होगी। कोई भी दुरूद शरीफ पढो, चाहे नमाज़वाला यअनी
दुरूदे इब्राहीम, या मुख्तसर दुरूद जैसे:

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ
 صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ يَا

﴿ २७ ﴾ जहन्नम से छुटकारे का वज़ीफा:

اللّٰهُمَّ اِنِّىْ اُصْبِحْتُ اُشْهِدُكَ وَاُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَا
 مَلَائِكَتَكَ وَا جَمِيعَ خَلْقِكَ اِنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ
 وَاَنْ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَا رَسُوْلُكَ ا

फज़ीलत: हज़रत अनस रदि. से रिवायत है के हुज़ूर ﷺ ने फरमाया जिसका

खुलासा यह है के जो शख्स इस दुआ को सुब्ह चार मरतबा पढ लेगा तो अल्लाह तआला उसके पूरे बदन को जहन्नम से आज़ादी अता फरमाएंगे।

(अबूदावुद: २/६९१)

और शाम को यह दुआ चार मरतबा इस तरह पढें:

اللَّهُمَّ إِنِّي أُمْسَيْتُ، أَشْهَدُكَ وَأَشْهَدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَ
 مَلَائِكَتَكَ وَجَمِيعَ خَلْقِكَ إِنَّكَ أَنْتَ اللَّهُ، لَا إِلَهَ إِلَّا
 أَنْتَ وَأَنْ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ.

﴿२८﴾ बखीली, बुज़दिली, बुरा बुढापा, दुन्या के फित्ने
और अज़ाबे कब्र से हिफाज़त:

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَ
أَعُوذُ بِكَ أَنْ أُرَدَّ إِلَى أَرْدَلِ الْعُمْرِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ
الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ.

नसई में बरिवायत हज़रत सअद रदि मन्कूल है के रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم यह
दुआ बहुत ज़यादह मांगा करते थे, और इस हदीस के रावी हज़रत सअद रदि बडे
एहतेमाम से यह दुआ अपनी सब अवलाद को याद कराया करते थे।

(नसई; बाबुल इसतिआज़ह मिनल बुख्ल :२/२६६.हं.५४५५)

❖ २९ ❖ बीमारी दूर करने के लिए:

تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ. الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ
يَتَّخِذْ وَلَدًا وَ لَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَ لَمْ يَكُنْ لَهُ
وَلِيٌّ مِّنَ الدُّنْيَا وَ كَبْرُهُ تَكْبِيرًا.

हजरत अबूहरैरह रदि. फरमाते हंय के एक दिन में रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم के साथ बाहिर निकला इस तरह के मेरा हाथ आपके हाथ में था, आप صلی اللہ علیہ وسلم ऐसे आदमी के पास से गुजरे जो बहोत शिकस्ता हाल और परेशान था, आपने पूछा के तुम्हारा यह हाल कैसे हो गया? उस शख्स ने अर्ज किया के बीमारी और तंगदस्ती

ने यह हाल कर दिया, आप ﷺ ने फरमाया: के में तुम्हें चंद कलिमात बतलाता हूं वह पढोगे तो तुम्हारी बीमारी और तंगदस्ती जाती रहेगी वह कलिमात उपरवाले थे।

उसके कुछ दिनों बाद फिर आप उस तरफ तशरीफ ले गए तो उसको अच्छे हाल में पाया, आपने खुशी का इज़हार फरमाया, उसने अर्ज़ किया जबसे आपने मुजे यह कलिमात बतलाए थे में पाबंदी उनको पढता हूं।

(मआरिफुल कुर्आन: ५/५४३)

नोट: रिवायत में इस दुआ के मुतअल्लिक कब पढना हय? और कितनी मरतबा पढना हय? यह नहीं मिल सका, इस लिए दिन में किसीभी एक वकत पढ लेवे तो इन्शाअल्लाह काफी हो जाएगा, और सुबह-शाम दोनों वकत पढ लेवे तो भी ठीक है।

﴿ ३० ﴾ सख्त बीमारी के मोके पर पढने की आयत:

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ . بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ .

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ . فَتَعَالَى اللَّهُ
 الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ . وَمَنْ يَدْعُ مَعَ
 اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ لَا فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا
 يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ . وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِيمِينَ .

सूरए मुअमिनून की यह आखरी आयतें खास फज़ीलत रखती हंय, इमाम
 बगवी रह. और इमाम षअलबी रह. ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रदि से

रिवायत किया है के वह एक ऐसे आदमी के पास से गुज़रे जो सख्त बीमारियों में मुब्तला था, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्उद रदि ने उसके कान में यह आयतें **أَفَحَسِبْتُمْ** से अखीर तक पढ दीं। वह उसी वकत अच्छा हो गया, रसूलुल्लाह ﷺ ने उनसे दरयाफत किया के आपने उसके कान में क्या पढा? हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्उद रदि. ने अर्ज़ किया के यह आयतें पढी हंय। रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: कसम है उस ज़ात की जिसके कब्जे में मेरी जान है, अगर कोई आदमी जो यकीन रखनेवाला हो यह आयतें पहाड के सामने पढ दे तो पहाड अपनी जगा से हट सकता है। (कुरतुबी: १२/१५७)

नोट: रिवायत में इस दुआ के मुतअल्लिक कब पढना हय? और कितनी मरतबा पढना हय? यह नहीं मिल सका, इस लिए दिन में किसीभी एक वकत पढ लेवे तो इन्शाअल्लाह काफी हो जाएगा, और सुब्ह-शाम दोनों वकत पढ लेवे तो भी ठीक है।

A decorative border with intricate floral and scrollwork patterns in black and white, framing the central text.

फर्ज़ नमाज़ के बाद
पढने के वज़ाइफ

﴿ ३१ ﴾ आयतुल कुर्सी के खास फज़ाइल:

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ج الْحَيُّ الْقَيُّومُ ج لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ ط
 لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ
 إِلَّا بِإِذْنِهِ ط يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ج وَلَا يُحِيطُونَ
 بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ج وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَ
 الْأَرْضَ ج وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ج وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ۝

हज़रत अबूहुरैरह रदि. फरमाते हंय के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: सूरए बकरह में एक आयत है जो कुर्आनी आयतों की सरदार है, वह जिस घर में पढी जावे शैतान वहां से निकल जाता है।

नसई शरीफ की एक रिवायत में है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: जो शख्स हर फर्ज नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढा करे तो उसको जन्नत में दाखिल होने के लिए सिवाए मोत के दूसरी कोई रूकावट नहीं है, यअनी मोत के बाद फोरन वह जन्नत के आषार और राहत व आराम को पाने लगेगा।

(सहीह इब्नुस्सुन्नी:१२४, मआरिफुल कुर्आन: १/६१२)

एक हदीस शरीफ में हुज़ूर ﷺ का इर्शाद है जो शख्स फर्ज नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढेगा वह दूसरी नमाज़ के आने तक खुदा तआला की हिफाज़त में रहेगा।

(मजमउज़्ज़वाइद: २/१४८)

इन अहादीस से मअलूम हुवा के आयतुल कुर्सी को हर फर्ज नमाज़ के बाद पढ लेना चाहिए, और दिन रात में किसी एक वक़्त घर में भी पढ लेना चाहिए।

❖ ३२ ❖ नमाज़ के बाद पढने का एक अमल; फुकरावाली तस्बीह:

हज़रत अबूहुरैरह रदि. हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم से रिवायत करते हंय के रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फरमाया: के जिसने

३३ मरतबा **سُبْحَانَ اللَّهِ**

३३ मरतबा **الْحَمْدُ لِلَّهِ**

और ३३ मरतबा **اللَّهُ أَكْبَرُ** पढा,

बस यह कुल ९९ मरतबा हुवा और सोवीं मरतबा में

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ.

पढे तो उसके गुनाह मुआफ हो जाते हंय, चाहे समंदर की झाग के बराबर
हों।
(मुस्लिम श. १/२१९)

नोट: हदीस शरीफ से मअलूम होता है के सूरए इख्लास यअनी (قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ)
और सूरए फलक यअनी (قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ) और सूरए नास यअनी
(قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ) भी हर फर्ज नमाज़ के बाद पढ लेना चाहिए। (नसइ: १/१५०)

अब जो दो वज़ीफे लिखे जा रहे हंय वह सिर्फ फजर
और मगरिब के फर्ज़ के बाद के मुतअल्लिक है।

❖ ३३ ❖ जहन्नम से छुटकारे की दुआ: (सात मरतबा)

फजर और मगरिब की नमाज़ के बाद यह दुआ मांगें।

اللَّهُمَّ أَجْرُنِي مِنَ النَّارِ .

फज़ीलत: हज़रत हारिस रह. से रिवायत है के आप ﷺ ने मेरे साथ कान में बात फरमाई और फरमाया जब तु मगरिब की नमाज़ से फारिग हो जाए तो सात मरतबा यह दुआ मांगा कर, जब तुने यह दुआ मांग ली और उसी रात तेरा इन्तेकाल हुवा तो तेरे लिए आग से छुटकारा लिखा जाएगा, और जब तु फजर की नमाज़ पढ ले

तब भी यह दुआ मांगा कर, अगर उसी दिन तेरा इन्तेकाल हुवा तो तेरे लिए जहन्नम से छुटकारा लिखा जाएगा। (अबूदावुद: २/६९३)

❖ ३४ ❖ फजर और मगरिब के फर्ज के बाद पढने का वज़ीफा: (दस मरतबा)

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي
وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ.

हदीस शरीफ में है जो शख्स फजर की नमाज़ के बाद किसीसे बात किए बगैर नमाज़ ही की हालत में बैठ कर (यअनी कायदे में बैठते हंय इस तरह) अपनी जगा से उठने से पेहले यह कलिमात दस मरतबा कहे तो उसके लिये हर हर कलिमह के बदले में

(१) दस नेकियां लिखी जाती हंय

(२) दस गुनाह मुआफ होते हंय

(३) दस दरजे (जन्नत में) बुलंद होते हंय

(४) वह पूरा दिन नापसंदीदह चीज़ और हर आफत और शैतान की

शरारत से महफूज़ रहता है।

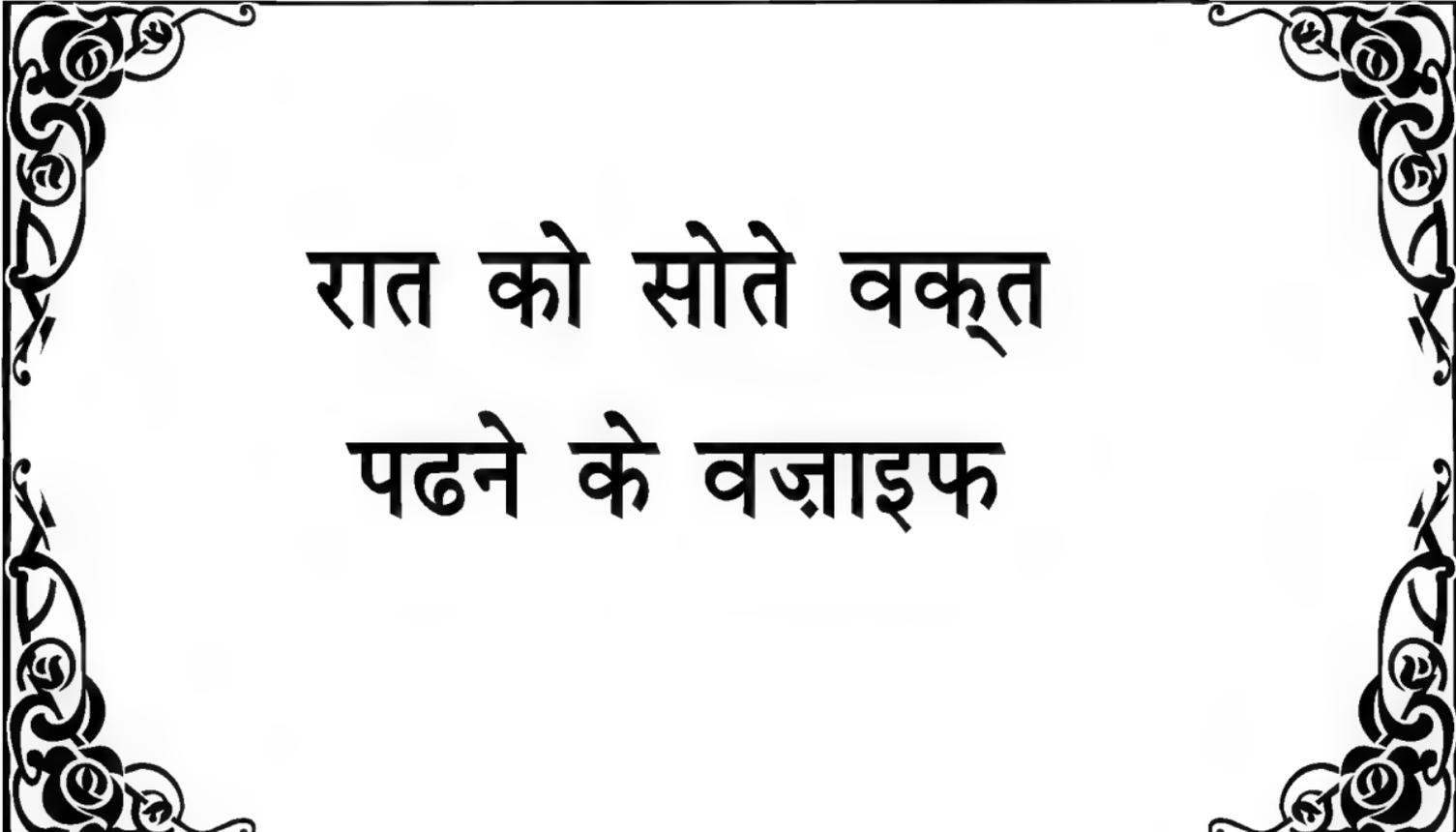
(५) और उस दिन में गुनाहों से महफूज़ रहेगा मगर यह के अल्लाह के

साथ शिर्क करे। (तिरमिज़ी: २/१८५ अमलुल यवमि वल्लयलह पे५३ मकतबए हुसयनियह गुजरानवाला)

नोट: एक रिवायत में दस गुलाम आज्ञाद करने का सवाब भी आया है, और उस

दिन में यह कलिमात पढनेवाले के लिए तस्बीह यअनी दुआ करते रहेंगे।

(मजमउज़्ज़वाइद: १०/११०,१०९)

A decorative border with intricate floral and scrollwork patterns in black ink, framing the central text.

रात को सोते वक्त
पढने के वज़ाइफ

सोने के वकत की दुआएं और आ 'माल

﴿३५﴾ सोने के वकत का पेहला अमल:

पेहले आयतुल कुर्सी पढ़ें।

बुखारी शरीफ की एक हदीस से मअलूम होता है के आयतुल कुर्सी रात को बिस्तर पर सोते वकत पूरी पढ़ें तो अल्लाह तआला की तरफ से एक हिफाज़त करनेवाला आ जाता है और सुब्ह तक शैतान करीब नहीं आता।

(बुखारी शरीफ : ५/५४ शैख तकियुद्दीन नदवी मद् ज़िल्लुहूवाला नुस्खा)

﴿ ३६ ﴾ दूसरा अमल:

اَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
 اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَا اُنزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهِ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ
 مَلَائِكَتِهِ وَ كُتُبِهِ وَ رُسُلِهِ، لَا نَفَرِقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهِ وَ قَالُوْا سَمِعْنَا
 وَ اطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا
 وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ عَلَيْهَا مَا اَكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُوَاخِذْنَا اِنْ
 نَسِينَا اَوْ اَخْطَاْنَا رَبَّنَا وَ لَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلٰى

الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَ
 اغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا إِنَّتَ مَوْلِينَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

यह सूरा बकरह की आखरी दो आयतें हंय, अहादीस सहीहा मुअतबरह में
 इन दो आयतों के बडे बडे फज़ाइल मज़कूर हंय, रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फरमाया:
 जिस शख्स ने रात को यह दो आयतें पढ ली तो यह उसके लिये काफी है।

और इब्ने अब्बास रदि. की रिवायत में है के रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फरमाया:
 के अल्लाह तआला ने दो आयतें जन्नत के खज़ाइन में से नाज़िल फरमाई है,
 जिसको तमाम मख्लूक की पेदाइश से दो हज़ार साल पेहले खुद रहमान ने अपने
 हाथ से लिख दिया था, जो शख्स इशा की नमाज़ के बाद इन आयतों को पढ ले

तो वह उसके लिये कयामुल्लयल यानी तहज्जुद के बराबर हो जाती है, और मुस्तदरक हाकिम और बयहकी की रिवायत में है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया के अल्लाह तआला ने सूरए बकरह को उन दो आयतों पर खत्म फरमाया है जो मुजे उस खास खजाने से अता फरमाई है जो अर्श के नीचे है, इस लिये तुम खास तोर पर इन आयतों को सीखो, और अपनी औरतों, बच्चों को सीखाओ। इस लिए हज़रत उमर रदि. और हज़रत अली मुरतज़ा रदि. ने फरमाया के कोई आदमी जिसको कुछ भी अक्ल हो वह सूरए बकरह की इन दो आयतों को पढे बगैर न सोएगा।

(मआरिफुल कुर्आन: १/६३१)

❖ ३७ ❖ तीसरा अमल:

हज़रत नवफल रदि. ने दरख्वास्त की के या रसूलुल्लाह ﷺ मुजे एसी चीज बता दें के जिसको में सोते वकत अपने बिस्तर पर पढुं आप ﷺ ने फरमाया

सुरए काफिरून पढो, (यअनी कुल या अय्युहल काफिरून वाली सूरत) इस लीये के उसमें शिर्क से बेज़ारी है। (तिरमीज़ी २/१७७)

﴿३८﴾ चोथा अमलः

हज़रत आइशा रदि. फरमाती हंय के नबीए करीम ﷺ रोज़ाना रात को जब अपने बिस्तर पर तशरीफ लाते तो तीनों सूरतों को यअनी सूरए इख्लास और मुअव्वज़तैन को पढ कर दोनों हथेली मिलाते और दम फरमाते, फिर पूरे बदन पर हाथ फिराते, और सर, चेहरा और आगे से शुरू फरमाते इस तरह तीन मरतबा करते। (अबूदावुदः किताबुल अदबः २/६८९)

तरीका

पेहले एक मरतबा **قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ** , **قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ** , और **قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ**

पढ लेवे और दोनों हथेली को मिला कर दम कर के पूरे बदन पर फिरा लेवे फिर दूसरी मरतबा यह तीनों सूरतें पढ कर दोनों हथेली को मिला कर दम कर के पूरे बदन पर फिरा लेवे, फिर तीसरी मरतबा भी तीनों सूरतें पढ कर दोनों हथेली को मिला कर दम कर के पूरे बदन पर फिरा लेवे, हाथ फिराने की इब्तिदा सर, चेहरे और सामने की तरफ से करे।
(बुखारी शरीफ: २/९३५)

❖ ३९ ❖ पांचवा अमल; इस्तिगफार का खास फायदा

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَ أَتُوبُ إِلَيْهِ

हदीस शरीफ में है के जो शख्स रात सोते वक़्त बिस्तर पर पहुँच कर यह इस्तिगफार तीन मरतबा पढे अल्लाह तआला उसके गुनाहों को मुआफ़ फरमा देंगे अगरचे समंदर की झाग के बराबर हो, अगरचे दरख्त के पत्तों और रेत के ढेर के

बराबर हों, अगरचे दुन्या के दिनों की ता'दाद के बराबर हों।

(तिरमिज़ी: २/१७७)

﴿४०﴾ छटा अमल; हज़रत फातिमा रदि . वाली तस्बीह:

३३ मरतबा سُبْحَانَ اللَّهِ

३३ मरतबा الْحَمْدُ لِلَّهِ

३४ मरतबा اللَّهُ أَكْبَرُ

(अबुदावुद: २/६९०)

हुज़ूर ﷺ की साहबज़ादी हज़रत फातिमा रदि. घर के काम से थक जाती

थी और घर के काम के लिये गुलाम, बांदी चाहती थी तो खूद नबीए करीम ﷺ

ने गुलाम बांदी के बजाए यह अमल सिखाया। (बुखारी शरीफ: २/९३५)

इस लिए यह तस्बीह रात सोते वकत पढ लिया करो।

नोट: यकीन के साथ इस अमल को पढ़ें, इन्शाअल्लाह सारी थकावट दूर हो जाएगी और सुबह ताज़ह उठोगे।

बुरे ख्वाब के शर से बचने का एक अहम अमल

हदीस शरीफ में है के जब तुममें से कोई शख्स बुरा ख्वाब देखे तो अपनी बाईं जानिब तीन मरतबा थुत्कार दे यअनी थु-थु कर दे और शैतान के शर से और ख्वाब के शर से अल्लाह तआला की पनाह चाहे और अपना पेहलू जिस पर (ख्वाब के वक्त) सोया हुवा था, बदल दे और अपने से मुहब्बत रखनेवाले के सिवा किसीको वह ख्वाब न बताए। (मुस्लिम श.ह.नं.२२६२ पे१०००, मत्बूआ दारे इब्ने हज़्म बैरूत)

और फोरन या बाद में दो रकाअत सलातुल हाजत पढ कर इस ख्वाब के शर से हिफाज़त की दुआ कर ले।

तफसीली फेहरिस्त

नं	उनवान	पेज
	जरूरी बातें	२
	सुबह के वक्त पढ़ने के वज़ाइफ	४
	अमल छोटा सवाब बड़ा	५
१	थोड़ी देर में बहोत ज़यादह नेकी:	५
२	जान-माल, घरबार की सलामती की दुआ:	७
३	सूरए यासीन शरीफ की फज़ीलत:	९
	शिक्र और दिखलावे से हिफाज़त	१०
४	शिक्रें अकबर (यअनी अल्लाह के साथ किसीको शरीक करना) शिक्रें अस्गर (यअनी १० रियाकारी, किसीको दिखाने के लिए अमल करना) दोनों से हिफाज़त की एक जामेअ दुआ	१०

	सुब्ह-शाम दोनों वक़्त पढने के वज़ाइफ़	१२
५	जिस दुआ के पढने से खुद अल्लाह तआला बंदे को कयामत में राज़ी करनेकी ज़िम्मेदारी लेवे	१३
६	सुब्ह-शाम के दरम्यान की कोताहियां मुआफ़ होने का वज़ीफ़ा:	१४
७	कुल हुवल्लाह, कुल अउजु बिरब्बिल फलक और कुल अउजु बिरब्बिन्नास के फज़ाइल, फवाइद पढने के अवकात और तरीका	१५
८	बहोत से फायदेवाला कलिमह	१९
९	जिन्नात से हिफाज़त के लिये दुआ	२०
१०	जादू से हिफाज़त के मुफीद कलिमात	२२
११	एकसीडन्ट, हवादिसात से बचने की दुआ	२३
	दुश्मनों और बलाओं से हिफाज़त	२५
१२	हुज़ूर <small>صلی اللہ علیہ وسلم</small> से नकल की गई सुब्ह शाम मांगने की दो मुबारक दुआएं	२५

१३	बुरे अमल से पनाह मांगने की दुआ	२६
	हर बुराई हर तकलीफ से हिफाज़त	२६
१४	हर तकलीफ से अमान पाने की दुआ	२६
१५	आयतुल कुर्सी और सूरए मुअमिन की चंद आयतों की फज़ीलत	२८
१६	हिफाज़त के लिए हज़रत अनस रदि की खास दुआ	२९
१७	इस दुआ की बरकत से अल्लाह तआला की मदद हासिल होगी और हर काम दुरूस्त हो जाएगा	३१
१८	तंदुरस्ती और आफियत के लिए	३२
१९	कुफ़्र, फ़क्र और अज़ाबे कब्र से पनाह मांगने की दुआ	३२
२०	हर काम आसान हो जावे, गम और उलझन दूर हो जावे	३३
२१	इस्तिगफ़ार का सरदार	३४

२२	दिन और रात की नेअमतों का शुक्र अदा करने की दुआ	३५
२३	इस्तिगफार का खास फायदा	३७
☆	अंधेपन, जुजाम और फालेज से हिफाजत की दुआ	३७
२४	इस्तिगफार के फायदे	३८
२५	سُبْحَانَ اللَّهِ، الْحَمْدُ لِلَّهِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، اللَّهُ أَكْبَرُ सुबह शाम सो मरतबा पढने का सवाब	३९
२६	रोज़ाना सो मरतबा दुरूद शरीफ	४०
२७	जहन्नम से छुटकारे का वज़ीफा	४२
२८	बखीली, बुज़दिली, बुरा बुढापा, दुन्या के फित्ने और अज़ाबे कब्र से हिफाजत	४४
२९	बीमारी दूर करने के लिए	४५

३०	सख्त बीमारी के मोके पर पढने की आयत	४७
	फर्ज नमाज़ के बाद पढने के वज़ाइफ	४९
३१	आयतुल कुर्सी के खास फज़ाइल	५०
३२	नमाज़ के बाद पढने का एक अमल; फुकरावाली तस्बीह	५२
३३	जहन्नम से छुटकारे की दुआ	५४
३४	फजर और मगरिब के फर्ज के बाद पढने का वज़ीफा	५५
	रात को सोते वक़्त पढने के वज़ाइफ	५७
	सोने के वक़्त की दुआएं और आ'माल	५८
३५	सोने के वक़्त का पेहला अमल	५८
३६	दूसरा अमल	५९
३७	तीसरा अमल	६१

३८	चौथा अमल	६२
३९	पांचवा अमल; इस्तिगफार का खास फायदा	६३
४०	छटा अमल; हज़रत फातिमा रदि. वाली तस्बीह	६४
	बुरे ख्वाब के शर से बचने का एक अहम अमल	६५

WWW.Nooranimakatib.com

इस किताब और साहिबे किताब की दुसरी किताबों को इन्टरनेट में पढने और बयानात और तफसीर की मजलिस सुनने और फरइइ डाउनलोड करने के लिये इस वेबसाइट की मुलाकात करें: **WWW.Nooranimakatib.com**

हर पीर को सुरत में होनेवाली तफसीर की मजलिस इशा के बाद लावइ सुनने के लिये भी इस वेबसाइट की मुलाकात करें।

बराए इसाले सवाब

- ☆ हज़रत मवलाना अबुल ख़ैर अब्दुस्समद इरानी रह .
 - ☆ हज़रत मवलाना अमानुल्लाह इरानी रह .
 - ☆ हज़रत मवलाना अस्अदुल्लाह इरानी रह .
- और इरानी खानदान के तमाम मर्हुमीन